2. वर्ण ज्ञान

वर्ण ज्ञान भाषा की सर्वप्रथम सीढ़ी होती है। बच्चे वर्णों के ज्ञान तथा उनके उच्चारण में जितने कुशल होंगे; उनकी भाषा पर पकड़ उतनी ही मज़बूत होगी।

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका सर्वप्रथम बच्चों को वर्णमाला से परिचित करवाएँ।
- ❖ उन्हें बताएँ, वर्णमाला में स्वर तथा व्यंजन दो प्रकार के वर्ण होते हैं।
- ❖ पहले स्वयं स्वर वर्णों का उच्चारण करें तदुपरांत बच्चों से करवाएँ। उच्चारण अपने साथ-साथ भी करवाया जा सकता है। इससे बच्चे आसानी से तथा सही उच्चारण कर पाते हैं।
- ❖ स्वरों के उच्चारण के बाद व्यंजनों का उच्चारण अभ्यास करवाएँ।
- ❖ कठिन वर्णों, जैसे– **ङ, ञ, ण** के उच्चारण पर अधिक बल दें।
- ❖ बच्चों को वर्णमाला में स्वर तथा व्यंजनों की संख्या से भी अवगत कराएँ।
- ❖ बच्चों से वर्णों की बार-बार आवृत्ति करवाएँ। प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें कि वह वर्णों का सही उच्चारण कर पा रहा है या नहीं।
- ❖ वर्णमाला के अतिरिक्त वर्णों ड़ तथा ढ़ का उच्चारण अभ्यास करवाएँ। **ड-ड़** और **ढ-ढ़** वर्णों के उच्चारण अंतर को स्पष्ट रूप से समझाएँ। इसके लिए उदाहरणों, जैसे– डमरू-पेड़, ढक्कन-पढ़ना आदि शब्दों द्वारा भी समझाया जा सकता है। एक बार सुनिश्चित कर लें कि बच्चे इन वर्णों का उच्चारण अंतर भली-भाँति समझ गए हैं।
- ❖ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को संयुक्त व्यंजनों– **क्ष, त्र, ज्ञ, श्र** के बारे में बताएँ। इनके उच्चारण पर ज़ोर दें। इन वर्णों की रचना के बारे में भी बताएँ।
- ❖ पाठ अभ्यास करवाते समय ध्यान दें कि प्रत्येक बच्चा वर्णों को ठीक प्रकार से समझ चुका है अथवा नहीं। बच्चों को कहें कि वे वर्णों का उच्चारण ज़ोर से करते हुए स्वर लिखें तथा रिक्त स्थानों में छूटे व्यंजन लिखें।